



જો કોઈ શખ્સ અલ્લાહ કે સાથ શિર્ક કરતા હૈ અલ્લાહ ને  
ઉસ પર જન્નત હરામ કર દી ઓર ઉસકા ઠિકાના આગ હૈ  
ઔર જાલિમોં કા કોઈ મદદગાર નહી. (માએદા: ૭૨)

દુસરા એડીશન : ઓગસ્ટ - ૨૦૧૭

# મુસલમાન કા અકીદા

(કુરઆન ઔર હદીસ કી રોશની મેં)

તાલિફ

શૈખ મુહમ્મદ બિન જમીલ ઝૈનુ

ઉસ્તાદ દારૂલ હદીસ, મકકહ મુકર્રમહ



## अल्लाह तआला का बंदो पर हक

**सवाल १: हमें अल्लाह ने किस लिये पैदा किया?**

**जवाब :** हमें अल्लाह ने इस लिये पैदा किया है कि हम उसकी बंदगी करें, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनायें. इस की दलील....

अल्लाह तआला का इरमान: 'और मैंने जिन्हों और धन्सानो को नहीं पैदा किया मगर इसी लिये कि वह मेरी इबादत करे.' (आरियात : ५५)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का इर्शाद है:

'अल्लाह का हक बंदो पर यह है कि वह उसकी इबादत करें और उसकी इबादत में किसी चीज़ को शरीक न करें.' (बुखारी-मुस्लिम)

**सवाल २: इबादत क्या है?**

**जवाब :** इबादत उन तमाम अकपाल व अइआल का नाम है जिन से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है जैसे दुआ, नमाज, कुर्बानी पगैरह.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'कह दीजिये यकीनन मेरी नमाज, मेरी सारी इबादत, मेरा जुना और मेरा भरना यह सब ખालीस अल्लाह के लिये है जो तमाम जहांनो का पालनेवाला है.' (अनआम : १५२)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: कि अल्लाह तआला इरमाता है: 'मेरा बंदो किसी चीज़ के साथ मेरी नज़दीकी हासिल नहीं करता जो मुझे उन चीज़ों से जयादा महबूब हों जो मैंने उस पर इर्ज़ की हैं.'

**सवाल ३: हम अल्लाह की इबादत कैसे करें?**

**जवाब :** जिस तरह हमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने हुकम दिया है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अब वह लोगो! जो इमान लाये हो अल्लाह का हुकम मानो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का हुकम मानो और अपने आमांल बरबाद न करो.' (मुहम्मद: ३३)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'जो शप्स ऐसा अमल करें जिस पर हमारा हुकम नहीं तो वह मर्दूह है.' (मुस्लिम)

**सवाल ४: क्या हम अल्लाह की ईबादत ढौड़ और उम्मीद के साथ करें?**

**जवाब :** ७ हां, हम उसकी ईबादत ईसी तरह करते हैं. अल्लाह तआला ने मोमिनों की हालत बयान करते हुअे इरमाया: ‘वह अपने रब को (जहन्नम के) ढौड़ और (जन्नत की) उम्मीद के साथ पुकारते हैं.’ (सजदा :१५) और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘में अल्लाह से जन्नत का सवाल करता हूं और आग से उसकी पनाह याहता हूं.’ (अबू दाउद-सहीह)

**सवाल ५: ईबादत में अेहसान (बेहतरीन तरीके से करना) क्या है?**

**जवाब :** ईबादत में अल्लाह तआला की तरफ पूरा पूरा ध्यान रचना अेहसान है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘वह आप को उस वकत देभता है जब आप क्याम करते हैं और ढो सजदह करनेवालों में आप के पलटने को देभता है.’

(शुअरा: २१७-२१८)

और रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अेहसान यह है कि तुम अल्लाह की ईबादत ईसी तरह करो कि तुम उसे देभ रहे हो और अगर तुम उसे नही देभते तो वह तुम्हें देभ रहा है.’ (मुस्लिम)

## तौहीद की किरमें और उसके इायदे

**सवाल १: अल्लाह तआला ने रसुलों को किस लिअे लेजा?**

**जवाब :** अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी ईबादत की तरफ दावत देने के लिअे और उसके साथ शिर्क से रोकने के लिअे लेजा.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘और हम ने हर उम्मत में रसुल लेजा कि अल्लाह की ईबादत करो और तागूत से बयो (तागूत से मुराद शैतान है ढो गैइल्लाह की ईबादत की तरफ दावत देता है).’ (नहल :३५)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अम्बिया आपस में बाध है.... और उन का दीन अेक है.’ (बुजारी-मुस्लिम)

**सवाल २: तौहीदे रबूबियत (रब होने में अेक मानना) क्या है?**

**जवाब :** अल्लाह तआला को रब होने में अेक मानने का मतलब यह है कि वह अपने अइआल में अकेला है, कोय दूसरा उसके कामों में शरीक नही, जैसे पैदा करना, तदबीर करना पगैरह.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'तमाम तारीक अल्लाह के लिअे है जो तमाम जहानों का रब है.' (इतिहा :२)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'तू ही आसमानों का और ञमीन का रब है.' (बुजारी-मुस्लिम)

**सवाल ३: तौहीदे उलूहियत (इबादत में अकेला मानना) क्या है?**

**जवाब :** वह उस अकेले ही की इबादत करना है जैसे पुकारना, ञबह करना और नजर मानना.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'और तुम्हारा माबूद सख्या अेक ही माबूद है उसके सिवा कोय सख्या माबूद नही पही रहमान रहीम है.'

(अल-बकर :१५३)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'पहली चीञ जिस की तरइ आप उन्हे दापत हैं, वह इस बात की शहादत होनी याहिअे कि अल्लाह के अलावा कोय सख्या माबूद नही.' (बुजारी-मुस्लिम)

'सब से पहले इस बात की दापत हो कि वह अल्लाह को अेक मानें.'

(बुजारी)

**सवाल ४: अल्लाह के अरमा व सिइात की तौहीद क्या है?**

**जवाब :** अल्लाह तआला ने अपनी किताब में अपनी जो सिइात बयान की हैं या रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने सहीह अहादीस में अल्लाह की जो सिइात बयान की हैं उन्हे हकीकत जानकर उसके लिअे साबित मानना जैसा कि अल्लाह तआला का अर्श पर होना, उसका उतरना, उसका हाथ पगैरह, इन सिइात को उसके लिअे इस तरह मानना जिस तरह उसके कमाल के लाअेक है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'उसके भिस्ल कोय चीञ नही और पही (सब कुछ) सुननेवाला देजनेवाला है.'

(शुअरा: ११)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'अल्लाह

तआला हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ उतरता है.' (मुस्लिम)  
(ईस तरह उतरना जो उस के जलाल के लायेक है जो उसकी मजलूक़ात में  
किसी के ज़ैसा नहीं)

### सवाल प: अल्लाह कहां है?

**जवाब :** अल्लाह तआला आसमानों से उपर अर्श पर है और....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'रहमान अर्श पर जुलुनट हुआ.' (ताहा: प)  
सहीह बुजारी में इस्तवा का मतलब बयान किया है: यानी चढा और  
जुलुनट हुआ.

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'बेशक अल्लाह  
तआला ने अेक किताब लिजी..... तो वह उस के पास अर्श पर है.'

(बुजारी-मुस्लिम)

### सवाल ड: क्या अल्लाह हमारे साथ है?

**जवाब :** अल्लाह तआला अपने सुनने, देजने और जानने के लेहाज से  
हमारे साथ है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'तुम दोनों मत डरो यकीनन में तुम्हारे  
साथ हूं, सुनता हूं और देजता हूं.' (ताहा: ४५)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'यकीनन तुम  
अेक सुननेवाले करीब को पुकारते हो और वह तुम्हारे साथ है.' (मुस्लिम)  
(अल्लाह तआला अर्श पर होने के बापजूट हमारे साथ है ईस की कैइयत  
बस वही जानता है) (मुतरजिम)

### सवाल ७: तौहीट का क्या इयदा है?

**जवाब :** तौहीट का इयदा यह है कि बंदा आभिरत में अज़ाब से महकूज  
रहता है, दुनिया में हिदायत हासिल होती है और गुनाह दूर हो जाते हैं.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जो लोग इमान लाये और अपने इमान  
के साथ जुल्म (शिक) की मीलापट नहीं की उन्ही के लिअे अमन है और  
वही हिदायत वाले हैं.' (अनआम : ८२)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'बंदो का हक  
अल्लाह तआला के जिम्मे यह है कि वह उस शख्स को अज़ाब न दे जो

## अमल कबूल होने की शर्तें

**सवाल १: अमल कबूल होने की शर्तें क्या हैं?**

**जवाब :** अल्लाह तआला के नजदीक अमल कबूल होने की तीन शर्तें हैं.

(१) अल्लाह तआला और उसकी तौहीद पर धर्मान लाना.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘यकीनन जो लोग धर्मान लाये और उन्होंने अच्छे अमल किये उनके लिये इरदोस के भागों में मेहमानी होगी.’ (कहः १०७)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘तू कह में अल्लाह पर धर्मान लाया और उस पर जमा रहा.’ (मुस्लिम)

(२) **धर्मान:** सिर्फ अल्लाह के लिये अमल करना, न किसीको टिजाने के लिये करना न सुनाने के लिये.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘पस अल्लाह की धर्मादत करो धस हाल में कि तुम जालिस उसीकी धर्मादत करनेवाले हो.’ (जुमर :२)

(३) रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम जो कुछ लेकर आये हैं अमल उसके मुताबिक होना.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘जो कुछ रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम टें वह ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें मना कर टे उस से रुक जाओ.’ (हशर :७)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘जो शप्स ऐसा अमल करे जिस पर हमारा हुकम न हो तो वह मरदूट है.’ (मुस्लिम)

## शिर्क अकलर

**सवाल १: अल्लाह के नजदीक सब से बडा गुनाह क्या है?**

**जवाब :** सब गुनाहों से बडा गुनाह अल्लाह के साथ शिर्क करना है.

अल्लाह तआला का इरमान है: ‘(लुकमान ने कहा) ये बेटे अल्लाह के साथ शिर्क न करना यकीनन शिर्क बहुत बडा जुल्म है.’ (लुकमान :१३)

और जब रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से पूछा गया कि कौन सा गुनाह सब से बड़ा है तो....

आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'कि तू अल्लाह का कोई शरीक बनाये जबकि उसने तुझे पैदा किया है.' (बुजारी-मुस्लिम)

### **सवाल २: सब से बड़ा शिर्क क्या है?**

**जवाब :** सब से बड़ा शिर्क अल्लाह तआला के बदले उस गैर कि इबादत करना जैसे गैबुल्लाह को पुकारना, मुर्दों से इरयाद करना, मदद मांगना या उन जिन्दा लोगों से मदद मांगना जो गायब हैं पास मौजूद नहीं।

अल्लाह ने इरमाया: 'अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ.' (निसा :३५)

और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'बड़े गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक बनाना है.' (बुजारी)

### **सवाल ३: क्या इस उम्मत में शिर्क मौजूद है?**

**जवाब :** हां मौजूद है. दलील ....

अल्लाह तआला का इरमान है: 'एन में से अकसर लोग अल्लाह पर इमान नहीं लाते मगर इस हाल में कि वह मुश्रिक है.' (युसूफ़ :१०५)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'क्यामत काश्म नहीं होगी यहां तक कि मेरी उम्मत के कुछ कबीले मुश्रिकीन के साथ मिल जायें और यहां तक कि जुतों की पूजा होने लगे.' (तिर्मिञ्ज-सहीह)

### **सवाल ४: मुर्दा या गायब लोगों को पुकारने का क्या हुकम है?**

**जवाब :** मुर्दा या गायब लोगों को पुकारना शिर्क अकबर में से है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अल्लाह के सिवा उनको न पुकारो जो तुम्हें न इयादा पहुंचाते हैं न नुकसान और अगर तुमने ऐसा किया तो उस पकत यकीनन तुम जालिमों (मुश्रिकों) से होगे.' (युनुस १०५)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'जो शप्स इस हाल में मरा कि अल्लाह के सिवा किसी शरीक को पुकारता था, आग में दाबिल होगा. (बुजारी)

**सवाल प: क्या दुआ (पुकारना) धभादत है?**

**जवाब :** ज हां दुआ (पुकारना) धभादत है,

अल्लाह ने इरमाया: ‘तुम्हारे रब ने इरमाया कि मुजे पुकारो में तुम्हारी पुकार को सुनूंगा. जो लोग मेरी धभादत से (यानी दुआ मांगने से) तकब्बुर करते हैं वह ञलील होकर जहन्नम में दाभिल होंगे.’ (गाफिर :५०)  
और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘दुआ (पुकारना) ही धभादत है.’ (अहमद, तिर्मिज-हसन, सहीह)

**सवाल ५: क्या मुर्दे पुकार सुनते हैं?**

**जवाब :** नहीं सुनते.

अल्लाह तखाला ने इरमाया: ‘यकीनन आप मुर्दों को नहीं सुना सकते.’ (अन्नमल :८०)  
‘और आप उनको नहीं सुना सकते जो कब्रों में हैं.’ (शतिर :२२)

### शिर्क अकलर की किरमें

**सवाल १: क्या हम मुर्दा और गायब लोगों से इरीयाद कर सकते हैं?**

**जवाब :** हम उन से इरीयाद नहीं कर सकते.

अल्लाह तखाला ने इरमाया: ‘और यह मुशिरक अल्लाह के सिवा जिन लोगों को पुकारते हैं वह कोध चीञ पैदा नहीं कर सकते और वह भूद पैदा किये गये हैं. मुर्दा हैं जिन्दा नहीं और वह नहीं जानते कि कब उठाये जायेंगे.’

‘जब तुम अपने रब से इरीयाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी दुआ कबूल इरमाय.’ (अनझाल :८)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अे जिन्दा हसती, अे काअेम रहने और काअेम रजनेपाले तेरी रहमत (के जरीअे) से ही इरीयाद करता हूं.’ (तिर्मिज-हसन)

**सवाल २: क्या गैरल्लाह से मदद मांगना जाधञ है?**

**जवाब :** जाधञ नहीं. दलील.....

अल्लाह तखाला का इरमान है: ‘सिर्ई तेरी ही धभादत करते हैं और तुज



હી સે મદદ માંગતે હૈ.’

(ફાતિહા :૫)

और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम झा एर्शाद है: ‘जब तू सवाल करे तो अल्लाह से सवाल कर और मदद मांगे तो अल्लाह से मदद मांग.’

(तिर्मिञ्ज-हसन)

**सवाल ३: क्या हम जिन्दा लोगों से मदद मांग सकते हैं?**

**जवाब :** ज हां. उन चीजों में जिन की वह ताकत रखते हैं.

अल्लाह तआला ने इरमाया: और नेकी और परहेजगारी में अेक दूसरे की मदद करो.’

(माघदा :२)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अल्लाह बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने लाघ की मदद में रहे.’ (मुस्लिम)

**सवाल ४: क्या गैरुल्लाह के लिये नजर मानना जायज है?**

**जवाब :** अल्लाह के सिवा किसी की नजर जायज नहीं. क्योंकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘अे मेरे रब मैंने तेरे लिये एस बरये की नजर मानी है जो मेरे पेट में है (दुनिया के कामों से) आजाद होगा.’

(आले एमरान : ३५)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: जो शप्स नजर माने कि अल्लाह की एताअत करेगा वह उसकी एताअत करे और जो नजर माने कि उसकी नाइरमानी करेगा वह उसकी नाइरमानी न करे.’

(बुजारी)

**सवाल ५: क्या गैरुल्लाह के लिये झबह करना जायज है?**

**जवाब :** जायज नहीं. दलील....

अल्लाह तआला झा इरमान है: ‘अपने रब ही के लिये नमाज पढ़ें और कुर्बानी करें.’

(अलकौसर :२)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अल्लाह तआला ने लानत की एस पर जो गैरुल्लाह के लिये झबह करे.’ (मुस्लिम)

**सवाल ५: क्या हम इब्रियालों की नजदीकी हासिल करने के लिये कब्रों का तपाइ कर सकते हैं?**

**जवाब :** कअबा के अलावा हम किसी का तपाइ नहीं कर सकते.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ' और याहिअे कि वह कदीम घर का तपाइ करे.' (अल हजज :८२)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'जिस ने सात चक्कर बैतुल्लाह का तपाइ किया और दो रकअतों पढी (यह अमल) अेक गर्दन आजाद करने की तरह होगा.' (एब्ने माजह-सहीह)

**सवाल ७: जदू का क्या हुकम है?**

**जवाब :** जदू कुफ्र है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'लेकिन शैतानों ने कुफ्र किया जो लोगों को जदू सिखाते थे.' (अल-बकर :१०२)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'सात हलाक करनेवाली चीजों से बचो अल्लाह के साथ शिर्क और जदू..... आभिर तक.' (मुस्लिम)

**सवाल ८: क्या हम अर्राइ (चोरीयां बतानेवाले) और डाहिन (आगे की जबरें बतानेवाले) को एल्मे गैब के दावे में सय्या मान सकते हैं?**

**जवाब :** हम उन्हें सय्या नहीं मान सकते. क्योकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'कह दीजिये आसमानों में और जमीन में जो ली है अल्लाह के अलावा कोय गैब नहीं जानता.' (नमल :५५)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'जो शप्स किसी चोरीयां बतानेवाले या आगे की जबरें बतानेवाले के पास आया इर उस की बात में उसे सय्या जाना तो उसने उस चीज का एन्कार किया जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम पर नाज़िल की गय हैं.'

(अहमद-सहीह)

**सवाल ८: क्या कोय शप्स गैब जानता है?**

**जवाब :** कोय शप्स गैब नहीं जानता. हां किसी रसुल को अल्लाह तआला गैब की किसी बात की जबर दे दे तो अलग बात है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'वह गैब का एल्म रजनेपाला है अपने गैब पर किसीको जबर नहीं देता सिवाय किसी रसूल के जिसे वह पसंद करे.'

(जिन्न :२५-२७)

(गैब की जानकारी देने से गैब की कोय बात मालूम हो जाये तो आदमी गैब का जाननेपाला नहीं हो जाता. परना तमाम मुसलमान ली गैब जाननेपाले हो जायेंगे क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने वह्य से मालूम होनेपाली बहुत सी गैब की जबरें उम्मत को बताय हैं. जैसे क्यामत के हालत, क्यामत के करीब की पेशगोय्यां वगैरह. मालूम हुआ गैब की बात की जबरें देने से उसे जानना ओर चीज है ओर गैब का जाननेपाला होना ओर चीज है. गैब को जाननेपाली सिई अल्लाह तआला की ज्ञात है.)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'अल्लाह के अलावा कोय गैब नहीं जानता.'

(तबरानी-हसन)

**सवाल १०: क्या शिझ हासिल करने के लिये धागा या कडा या छल्ला पहन सकते है?**

**जवाब :** हम यह चीजें नहीं पहन सकते. क्योंकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अगर अल्लाह तआला तुम्हें कोय तकलीफ पहुंचाये तो उसके अलावा कोय उसे दूर करनेपाला नहीं.'

(अल-अनआम : १७)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'जबरदार यह तुम्हारी कमजोरी ही को बढायेगा ऐसे उतार कर डैंक दो क्योंकि (घसी हालत में) अगर तुम मर गये तो कभी कामियाबी नहीं पा सकोगे.'

(मुस्तदरक हाकिम)

**सवाल ११: क्या हम जर मोहरे, धूँधे वगैरह लटका सकते है?**

**जवाब :** शिझ या नजर से बचने के लिये नहीं लटका सकते क्योंकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अगर अल्लाह तआला तुम्हें कोय तकलीफ पहुंचाये तो उसके अलावा कोय उसे दूर करनेपाला नहीं.'

(अल-अनआम : १७)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'जिस ने कोय

तमीमा लटकाया उसने यकीनन शिर्क किया.’ (अहमद-सहीह)  
(तमीमा से मुराद वह मनके या धूँधे हैं जो नज़रे जद से जयने के लिये लटकाये जाते हैं)

**सवाल १२: इस्लाम के मुजालिह़ कानूनों पर अमल करने का क्या हुक़म है?**

**जवाब :** अगर जाइज़ समज कर इस्लाम के मुजालिह़ क़वानीन पर अमल करे या उन के सहीह होने का अकीदा रजे तो यह कुफ़्र है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘ और जो शफ़्स उस के मुताबिक़ ईसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल इरमाया है तो यही लोग काफ़िर हैं.’

(अलमाइदा :४४)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘और जब तक उनके हाकिम अल्लाह की किताब के मुताबिक़ ईसला नहीं करेंगे और अल्लाह ने नाज़िल किये हुअे हुक़मों पर अमल नहीं करेंगे अल्लाह तआला आपस में उनके लडाई डाल देगा.’

(इब्ने माज़)

**सवाल १३: हम शैतान के इस सवाल को कैसे रद करेंगे की अल्लाह तआला को किस ने पैदा किया?**

**जवाब :** जब शैतान किसी के दिल में यह पसपसा डाले वह अल्लाह से पनाह मांगे.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘और आप को शैतान की तरफ़ से कोय योका लगे तो अल्लाह की पनाह मांगे. और रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने हमें सिजाया है कि हम शैतान की चाल को रदू करें और यह कहें: ‘मैं अल्लाह और उसके रसुलों पर इमान लाया. अल्लाह अेक है. अल्लाह बेनियाज़ है. न उसने किसी को जना न किसी ने उसको जना और न ही कोय उसका शरीक व उसकी बराबरी का है.’ फिर बांइ तरफ़ तीन बार थूक़ दे और शैतान से पनाह मांगे और जयादा सोचने से इक़ जाये. इस तरह यह पसपसा जल्म हो जायेगा.’ (यह उन हदीसों का जुलासा है जो अहमद, बुजारी, मुस्लिम और अबू दाउद में हैं)

**सवाल १४: शिर्क अकबर का क्या नुक्सान है?**

**जवाब :** शिर्क अकबर की वजह से आदमी हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाता है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जो कोय शप्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी ओर उसका हिंजाना आग है और ञालिमों का कोय मद्दगार नहीं.' (माध्दा :७२)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'जो शप्स अल्लाह तआला से मिला कि उसके साथ किसी को शरीक करता हो, आग में दाभिल होगा.' (मुस्लिम)

**सवाल १५: क्या शिर्क के साथ अमल का कोय फायदा होगा?**

**जवाब :** शिर्क के साथ अमल का कोय फायदा नहीं. कयोंकि अल्लाह तआला ने अंभिया अलैहिमुस्सलाम के बारे में इरमाया: 'अगर वह अल्लाह के साथ शरीक ठहराते तो उनके तमाम अमल बरबाद हो जाते.' (अनआम :८८)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'अल्लाह तआला इरमाता हैं में तमाम शरीकों से जयादा शिर्क से बेपरवाह हूं. जिस शप्स ने कोय ऐसा अमल किया जिस में मेरे साथ मेरे गैर को ली शरीक किया में उसे ओर उसके शिर्क को छोड देता हूं.'

## शिर्क असगर

**सवाल १: शिर्क असगर क्या है?**

**जवाब :** शिर्क असगर रिया (दिजाने के लिये अमल करना) है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जो शप्स अपने परवरटीगार की मुलाकात की उम्मीद रजता हो वह नेक अमल करे और अपने रज की र्धबादत में किसी को शरीक न करे.' (कह्फ़ :११०)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: 'मुजे तुम्हारे बारे में जिस चीज का सबसे जयादा जोड़ है वह शिर्क असगर रिया (लोगों को दिजाने के लिये अमल करना) है.' (अहमद-सहीह)

यह कहना ली शिर्क असगर में शामिल है: 'अगर अल्लाह और इलां शप्स

न होता (तो यह हो जाता-वह हो जाता). जो अल्लाह याहे और तू याहे.’  
 और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘यह मत कहे,  
 जो अल्लाह याहे और इलां याहे, बल्कि यूं कहे, जो अल्लाह याहे इर इलां  
 याहे.’ (अबू दाउद-सहीह)

**सवाल २: क्या गैरल्लाह की कसम उठाना जायज़ है?**

**जवाब :** अल्लाह के सिवा किसी की कसम उठाना जायज़ नहीं है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘कह दीजिये क्यो नहीं, मुझे अपने रब की  
 कसम है तुम जरूर उठाये जाओगे.’ (तगाबुन :७)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘जिसने  
 गैरल्लाह की कसम उठाई उसने यकीनन शिर्क किया.’ (अहमद-सहीह)

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘जिसे कसम  
 उठानी हो वह अल्लाह की कसम उठाये या जामोश रहे.’ (बुजारी-मुस्लिम)

## वसीला पकडना और सिफ़ारिश तलब करना

**सवाल १: हम अल्लाह की तरफ़ किस चीज़ का वसीला पकड़ें?**

**जवाब :** वसीला पकड़ने की कुछ सुरतें जायज़ हैं और कुछ नाजायज़ हैं.

**(१) जायज़ सुरतें यह हैं.**

(१) अल्लाह तआला के अस्मा (नामों) और उसकी सिफ़ात के वास्ते  
 से दुआ करना, (२) अपने नेक आमाल को वसीला बनाकर पेश करना,  
 (३) किसी ज़ुन्दा एन्सान से दुआ करवाना.

**दलीलें:** अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘और सब से अच्छे नाम  
 अल्लाह ही के हैं तो उसे उनके साथ पुकारो.’ (आराफ़ :१८०)

और अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘अथ वह लोगो जो एमान लाये हो  
 अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला तलाश करो.’ (माएद :३५)

एब्ने कसीर (रह.) ने कतादा से नकल करते हुये एंसका मतलब बयान  
 इरमाया: यानी उसकी एताअत और उसकी रज़ा के मुताबिक़ अमल करने के  
 साथ उसकी नज़दीकी तलाश करो.

और आप सल्लल्लाहु अल्यहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अे अल्लाह में

तुज से हर उस नाम के साथ सवाल करता हूं जो तेरा नाम है.’

(अहमद-सहीह)

और आपने उस सहाबी से इरमाया जिस ने आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से जन्नत में आपके साथ का सवाल किया था. अपने बारे में ज्यादा सज्दों (यानी नमाज के) साथ मेरी मदद करो. (जो एक नेक अमल है).

हमें अल्लाह तआला से, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से और ओलिया अल्लाह से जो **मुहब्बत है उसके वास्ते से** ली दुआ जायज़ है क्योंकि यह एक नेक अमल है. इसी तरह से अल्लाह तआला को अपने रसुल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम और अपने ओलिया से जो **मुहब्बत है उसके वसीले से** ली दुआ जायज़ है क्योंकि **मुहब्बत अल्लाह की सिद्धत है**. आमांल के वसीले से दुआ करने की एक भिसाल सहीह जुभारी में गारवाले तीन आदमियों का किस्सा ली है जिन्होंने अपने नेक आमांल के वसीले से दुआ की तो अल्लाह ने उन की मुश्किल दूर इरमा दी.

**(२) नाजायज़ वसीला:** मुर्दों को पुकारना, उनसे हाजतें तलब करना जैसा कि आजकल हो रहा है, यह शिर्क अकबर है.

और अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘अल्लाह के अलावा उनको मत पुकारिये जो न आप को झायदा देते हैं न नुकसान, अगर आपने ऐसा किया तो यकीनन उस वकत आप ञालिमों (मुश्रिकों) से होंगे.’

(युनुस : १०५)

**(३) भिदअत वसीला:** यह कहना कि परपरदीगार! रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम या किसी और जुजुर्ग के जाह व हुर्मत (मरतबे) के वसीले से हमारी दुआ कुबूल इर्मा यह भिदअत है. क्योंकि सहाबा (रज़ी.) ने यह काम नहीं किया. टेजीअे अमीरुल-मोमिनीन उमर (रज़ी.) ने अब्बास (रज़ी.) का वसीला पकडा मगर उस वकत जब वह छुन्दा थे उन से दुआ करवाय, मरे हुअे का वसीला नहीं पकडा यहां तक कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की पज्ञात के बाद उनका वसीला ली नहीं पकडा.

यह वसीला कभी कभी शिर्क तक पहुंचा देता है. जब यह अकीदा हो कि अल्लाह तआला दुनिया के हाकिम और अमीर की तरह किसी बशर के

વાસ્તે કા મુહતાજ હૈ ક્યોંકિ ઉસને ખાલિક કો મખ્લૂક કે જેંસા સમજ લિયા. વસીલે કી ઓર જયાદા તફ્સીલ કે લીએ શૈખ અલબાની કી કિતાબ ‘તવસ્સુલ વ અહકામિહી વ અનવાઇહી’ કો પઢીએ.

**સવાલ ૨: કયા દુઆ કે લિએ કિસી ઈન્સાન કે વાસ્તે કી ઝરૂરત હૈ?**

**જવાબ :** દુઆ કે લિએ કિસી ઈન્સાન કે વાસ્તે કી ઝરૂરત નહી ક્યોંકિ....

અલ્લાહ તઆલા ને ફરમાયા: ‘ઓર જબ મેરે બન્ટે આપસે મેરે બારેમેં સવાલ કરૈ તો ચકીનન મેં કરીબ હૂં.’ (અલ-બકર :૧૮૬)

ઓર આપ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ ને ફરમાયા: ‘ચકીનન તુમ એક સુનનેવાલે કરીબ કો પુકારતે હો ઓર વહ તુમ્હારે સાથ હૈ (અપને ઈલ્મ કે સાથ).’ (મુસ્લિમ)

**સવાલ ૩: કયા જુન્દો સે દુઆ કરવાના જાઇઝ હૈ?**

**જવાબ :** હાં જુન્દા લોગોં સે દુઆ કી દરખાસ્ત કરના જાઇઝ હૈ, મુદોં સે નહી. અલ્લાહ તઆલા ને રસુલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ કો જબ આપ જુન્દા થે મુખાતિબ કરતે હુએ ફરમાયા: ‘ઓર અપને ગુનાહોં કે લિએ ઓર ઈમાનદાર મદોં ઓર ઈમાનદાર ઓરતોં કે લિએ બખ્શીસ તલબ કરૈ.’ (મુહમ્મદ :૧૯)

ઓર સહીહ હદીસ મેં હૈ જિસે તિર્મિજી ને રિવાયત કિયા હૈ એક ખરાબ નઝર વાલા આદમી નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ કે પાસ આયા ઓર કહા, ‘આપ અલ્લાહ સે દુઆ કીજિએ કિ વહ મુજે આફિયત અતા ફરમાએ.’

(આપકી વફાત કે બાદ કિસી સહાબી ને આપસે દુઆ કી દરખાસ્ત નહી કી. ઈસલિએ કિસી ફોત શુદહ સે દુઆ કી દરખાસ્ત કરના જાઇઝ નહી)

**સવાલ ૪: રસુલ કા વાસ્તા કયા હૈ?**

**જવાબ :** રસુલ કા વાસ્તા યહ હૈ કિ આપ ને દીન પહુંચા દિયા.

અલ્લાહ તઆલા ને ફરમાયા: ‘એ રસુલ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ જો કુછ આપકે રબ ને આપકી તરફ નાઝિલ કિયા હૈ ઉસે પહુંચા દિજિએ.’

(માઇદા :૬૭)

ઓર જખ્ન સહાબ્ના (રઝિ.) ને કહા: ‘હમ શહાદત દેગેં કિ આપને ચકીનન (દીન) પહુંચા દિયા તો રસુલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમ ને



इरमाया: अे अल्लाह गवाह हो ढा.'

(मुस्लिम)

**सवाल ५: हम रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सिफ़ारिशकी दरफ़ास्त किस से करे?**

**जवाब :** हम रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सिफ़ारिशकी दरफ़ास्त अल्लाह तआला से ही करेंगे.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'कह दीजिये सिफ़ारिश सबकी सब अल्लाह ही के लिये है.'

(ज़ुमर : ४४)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने सहाबी को यह कहने की तालीम दी: 'अे अल्लाह मेरे बारेंमें आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सिफ़ारिश कबूल इरमा.'

(तिर्मिज़-हसन सहीह)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'मैंने अपनी दुआ कयामत के दिन सिफ़ारिश के लिये छुपा रज़ी है उसके लिये जो मेरी उम्मत मेंसे इस हालमें मरे कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेता हो.'

(मुस्लिम)

**सवाल ५: क्या हम जिन्दो से सिफ़ारिश तलब कर सकते है?**

**जवाब :** जिन्दों से दुनिया के कामों में सिफ़ारिश तलब कर सकते हैं.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जो शफ़्स अच्छी सिफ़ारिश करे उसके लिये उसमेंसे हिस्सा होगा और जो शफ़्स बुरी सिफ़ारिश करे उसके लिये उस में से बोज़ होगा.'

(निशा : ८५)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'सिफ़ारिश करो तुम्हें अज़्र दीया जायेगा.'

(अबू दाउद- सहीह)

**सवाल ७: क्या रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की तारीफ़ में मुबालगा (बढाना-चढाना) कर सकते हैं?**

**जवाब :** हम आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की तारीफ़ में मुबालगा नहीं करेंगे.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'कह दीजिये मैं तो तुम्हारी तरह का अेक बशर ही हूं मेरी तरह पत्थ की जाती है कि तुम्हारा सच्चा माबूद अेक ही माबूद है.'

(कटफ़ : ११०)

और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'मुझे उस तरह हट से न बढ़ाओ जिस तरह धसाधर्यों ने धसा भिन मरथम अलयहिस्सलाम को हट से बढ़ा दिया क्योंकि मैं तो सिर्फ़ बन्दा हूँ तो तुम यह कहे कि वह अल्लाह का बन्दा और उसका रसुल है.' (बुजारी)

## जिहाद, वला और हुकमा

**सवाल १: जिहाद ई सनीलिल्लाह (अल्लाह की राह में जिहाद) का क्या हुकम है?**

**जवाब :** माल, जान और ञबान के साथ जिहाद वाजिब है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'निकलो हलके हो या बोजल और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद करो.' (तौबा :४१)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'मुशिरकों से अपने मालों, अपनी जानों और अपनी ञबानों के साथ जिहाद करो.'

(अबू दाउद-सहीह)

**सवाल २: वला क्या है?**

**जवाब :** वला से मुराद मुहब्बत और मदद है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त और मददगार हैं.' (तौबा :७१)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिअे धमारत की तरह है उसका एक हिस्सा दूसरे को कुप्पत देता है.'

**सवाल ३: क्या काफ़िरों से दोस्ती और उनकी मदद जायज़ है?**

**जवाब :** काफ़िरों से दोस्ती और उनकी मदद जायज़ नहीं.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'और तुममेंसे जो कोय शअ्स उनसे दोस्ती करे वह उनही मेंसे है.' (अलमाधदा :५१)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'बेशक बनी कुलां के घरवाले मेरे दोस्त नहीं हैं.' (अहमद-सहीह)

**सवाल ४: वली कौन होता है?**

**जवाब :** परहेज़गार मोमिन ही वली होता है.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जबरदार अल्लाह के औलिया (दोस्तों) पर कोइ ज़ोड़ नहीं, न वह गम जाअेंगे, वह लोग जो इमान लाअे और इरते थे.'

(युनुस : ५२-५३)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'मेरे दोस्त तो सिई अल्लाह तआला और नेक मोमिन हैं.'

(अहमद-सहीह)

**सवाल ५: मुसलमान किस चीज़ के साथ ईसला करें?**

**जवाब :** मुसलमान कुरआन और हदीस के साथ ईसला करें.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'उनके दर्मियान उस चीज़ के साथ ईसला करो जो अल्लाह तआला ने नाज़िल इरमाई.'

(माईदा : ४८)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'अे गैब और हाज़िर को जाननेवाले अपने बन्दे के दर्मियान तू ही ईसला करेगा.'

(मुस्लिम)

### कुरआन और हदीस पर अमल

**सवाल १: अल्लाह तआला ने कुरआन कयों नाज़िल इरमाया?**

**जवाब :** अल्लाह तआला ने कुरआन अमल करने के लिअे नाज़िल इरमाया. अल्लाह तआला ने इरमाया: 'पैरपी करो उसकी जो तुम्हारी तरइ तुम्हारे रब की तरइ से नाज़िल किया गया.'

(अअराइ : ३)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'कुरआन पढो, उस पर अमल करो और उसे जाने का झरीया मत बनाओ.'

(मुस्नद अहमद)

**सवाल २: सहीह हदीस पर अमल का क्या हुकम है?**

**जवाब :** सहीह हदीस पर अमल वाज़िब है कयोंकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'जो कुछ रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम तुम्हें दे ले लो और जिस से मना कर दें उस से इक जाओ.'

(हशर : ७)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'भेरे तरीके और हियायतपाले, भलायपाले जुल्हा के तरीके को लाजिम पकडो और एसे मजबूती से थाम लो.' (अहमद-सहीह)

**सवाल 3: क्या हदीस के बगैर कुरआन के साथ हमारा गुळारा हो सकता है?**

**जवाब :** हदीस के बगैर सिई कुरआन से हम कभी गुळारा नहीं कर सकते. अल्लाह तआला ने इरमाया: 'हमने आप की तरफ़ ङिक नाङिल किया ताकि लोगों के लिअे यह चीज बयान करें जो उनकी तरफ़ नाङिल की गइ.' (नहल : 77)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'याद रजो! मुजे कुरआन और उसके साथ उसकी भिरल दी गइ है.' (अबू दाउद)

**सवाल 4: क्या हम किसी की बात को अल्लाह तआला और उसके रसुल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की बात से आगे रज सकते हैं?**

**जवाब :** हम किसी की बात को अल्लाह और उसके रसुल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की बातसे आगे नहीं रज सकते क्योकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अे यह लोगों! जो एमान लाअे हो अल्लाह और उसके रसुल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से आगे मत बढो.' (अल हुजुरात : 1)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'जालिक की नाइरमानी में किसी मजलूक की इरमांवरदारी जइज नहीं.' (तबरानी-सहीह)

और एब्ने अब्बास (रजि.) ने इरमाया: 'मुजे डर है तुम पर आसमान से पत्थर न बरसें, में तुम्हें केहता हूं रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया और तुम केहते हो अबू बक्र और उमर (रजि.) ने इरमाया.'

**सवाल 5: जब आपस में हमारा एङितलाइ हो जअे तो क्या करे?**

**जवाब :** हम अल्लाह की किताब और सहीह हदीसों की तरफ़ पलटेंगे.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'इर अगर तुम किसी चीज में ङगड पडो

तो उसे अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की तरफ़ लौटा दो अगर तुम अल्लाह तआला और आभिरत के टिन पर धमान रहते हो, यह बेहतर है और अन्जाम के लेहाज़ से सबसे अच्छा है.’

(निसा :५८)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘तुम मेरी और हिदायत पाओ हुओ फुल्हा की सुन्नत को लाज़िम पकडो और उसे मज़बूती से थाम लो.’

(अहमद-सहीह)

**सवाल ५: तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से किस तरह मुहब्बत करते हो?**

**जवाब :** मैं उनकी इरमाबरदारी ओर उनके अहकाम की पैरवी के साथ उनसे मुहब्बत करता हूँ.

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘कह दीजिओ अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा, तुम्हे तुम्हारे गुनाह बफ़्श देगा और अल्लाह तआला बफ़्शनेवाला रहम करनेवाला है.’

(आले धमरान :३१)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘तुम में से कोइ शफ़्स मोमिन नहीं हो शक़ता जब तक मैं उसके नज़दीक़ उसके वालिद, उसकी ओलाद और तमाम लोगों से ज़यादा महबूब न हो जाऊँ.’

**सवाल ७: क्या हम अमल छोडकर तकदीर पर बरोसा कर लें?**

**जवाब :** हम अमल नहीं छोडेगें क्योकि....

अल्लाह तआला ने इरमाया: ‘तो जिस ने दिया ओर तक़वा इफ़्तियार किया और सबसे अच्छी बात को सच़्या माना हम उसे आसान रास्ते की सहूलत देंगे.’

(अल्लैल प-७)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: ‘अमल करो क्योकि हर शफ़्स के लिओ वह चीज़ आसान कर दी गइ है जिसके लिओ वह पैदा किया गया है.’

(बुजारी - मुस्लिम)

**सवाल १: क्या दीन में कोई बिद्यत हसना है?**

**जवाब :** दीन में कोई बिद्यत हसना नहीं. धस की दलील....

अल्लाह तआला का इरमान है: 'आज मेंने तुम्हारे लिअे तुम्हारे दीनको मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिअे धस्लाम को अतौरे दीन पसंद किया.' (अल माधदा : 3)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'और हर बिद्यत गुमराही है और हर गुमराही आग में है.' (अहमद-सहीह)

**सवाल २: दीन में बिद्यत क्या है?**

**जवाब :** दीन में बिद्यत यह है कि धस में कोई जयादती या कमी कर दी जाये. अल्लाह तआला ने मुश्किन की धिदखात पर रट्ट करते हुअे इरमाया: 'क्या उनके लिअे ऐसे शरीक हैं जिन्होंने उनके लिअे दीनकी पह राह निकाली जिसकी अल्लाह ने धजात नहीं दी.' (शूरा : २१)

और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'जिस शप्स ने हमारे धस काम यानी दीन में पह चीज निकाली जो धस में नहीं है तो वह मर्दू है.' (बुजारी-मुस्लिम)

**सवाल ३: क्या धस्लाम में कोई सुन्नते हस्ना है?**

**जवाब :** हां धस्लाम में सुन्नते हस्ना है.

आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरमाया: 'जिस ने धस्लाम में अरखी सुन्नत जारी की उसके लिअे उसका अज्र होगा और उन लोगों का अज्र भी जो उसके बाद उस पर अमल करेंगे अगैर धसके कि उन के सवाल में कोई कमी हो.' (बुजारी)

**सवाल ४: मुसलमानों को गलबा कब हासिल होगा?**

**जवाब :** मुसलमानों को गलबा उस पकत हासिल होगा जब वह अपने रब की किताब और अपने नबी सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सुन्नत को दोबारा अमली तौर पर नाफ़िज करेंगे, तोहिद झैलाअेंगे और शिर्क की तमाम सूरतों से लोगों को डराअेंगे और अल्लाह के दुश्मनों के लिअे जितनी

कुप्यत तैयार कर सकेंगे करेंगे.

अल्लाह तआला ने इरमाया: 'अे वह लोगो! जे इमान लाअे हो अगर तुम अल्लाह (के ईन) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदम जमा देगा.'

(मुहम्मद :७)

और इरमाया:

'और अल्लाह तआला ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से इमान लाअे और जिन्होंने ने नेक अमल किये वह उन्हें ऊरर ऊमीन में हाकिम बनाअेगा जिस तरह उन लोगों को हाकिम बनाया जो उनसे पहले थे और उनके लिये उनके इस ईन को ऊमीन में मऊबूती से काअेम करेगा जो उस ने उनके लिये पसंद इरमाया है और उन्हें उनके जोड़ के बदले अमन अता इरमाअेगा. वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी चीऊ को शरीक नहीं करेंगे.'

(नूर: ५५)



अकीदे के बारे में यह चंद जरूरी सवाल और उन के जवाब हैं. हर जवाब के साथ कुरआन और हदीस में से इसकी दलील दी गई है ताकि पढनेवाले को जवाब सहीह होने का इत्मिनान हासिल हो जाअे क्योंकि दुनिया और आभिरत में अकीद-अे-तौहिद ही इन्सान की शुश किरमती की बुन्याद है. अल्लाह तआला से ही दरआस्त है कि इस के साथ मुसलमानों को फायदा पहुंचाअे और इसे भास अपने लिये बनाअे.

मुहम्मद बिन जमील जैनु